



Web: parmeshwarkaniyam.org

ईश्वर की व्यवस्था: परिशिष्ट 4: मसीही का बाल और दाढ़ी

लैव्यव्यवस्था 19:27 में आज्ञा

ईश्वर द्वारा दिए गए पुरुषों के बाल और दाढ़ी बनाए रखने की आज्ञा को अनदेखा करने का कोई बाइबिल आधार नहीं है, फिर भी लगभग सभी ईसाई संप्रदाय इसे अनदेखा करते हैं।

हम जानते हैं कि यह आज्ञा बाइबिल काल के दौरान सभी यहूदियों द्वारा बिना किसी व्यवधान के निष्ठापूर्वक मानी जाती थी। आज के अति-रूढ़िवादी यहूदी इसे अभी भी मानते हैं, हालाँकि, रब्बी परंपराओं के कारण इसके साथ गैर-बाइबिल विवरण जुड़े हुए हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु, उनके सभी प्रेरित और शिष्य, लैव्यव्यवस्था 19:27 सहित तोराह में निहित सभी आज्ञाओं का निष्ठापूर्वक पालन करते थे:

"अपने सिर के चारों ओर के बाल मत मुंडाओ और दाढ़ी के किनारों को त्वचा के पास मत काटो।"

प्रारंभिक ईसाई भटकाव

पहले ईसाइयों ने लैव्यव्यवस्था 19:27 में दी गई आज्ञा से भटकना शुरू कर दिया, मुख्यतः ईसाई युग के प्रारंभिक सदियों के दौरान सांस्कृतिक प्रभावों के कारण।

ग्रीक और रोमन प्रभाव

सांस्कृतिक प्रथाएँ और समझौता

जब ईसाई धर्म ग्रीको-रोमन संसार में फैला, तो परिवर्तित लोगों ने अपनी सांस्कृतिक प्रथाएँ भी साथ लाईं। ग्रीक और रोमन स्वच्छता और सौंदर्य मानदंडों में बाल और दाढ़ी को मुंडवाना और ट्रिम करना शामिल था। ये प्रथाएँ गैर-यहूदी ईसाइयों की परंपराओं को प्रभावित करने लगीं।

कलीसिया का दृढ़ न रहना

यह वह समय होना चाहिए था जब कलीसिया के नेताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए था कि सांस्कृतिक मूल्यों और प्रथाओं की परवाह किए बिना, भविष्यद्वक्ताओं और यीशु की शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

उन्हें ईश्वर की किसी भी आज्ञा पर समझौता नहीं करना चाहिए था। लेकिन यह कमी पीढ़ियों तक चली गई, जिससे एक ऐसा समुदाय बना जो ईश्वर की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्यता बनाए रखने में कमजोर हो गया।

ईश्वर द्वारा संरक्षित अवशेष

यह कमजोरी आज भी बनी हुई है, और जो कलीसिया हम अब देखते हैं, वह उस कलीसिया से बहुत दूर है जिसे यीशु ने स्थापित किया था। इसका अस्तित्व केवल इसलिए है क्योंकि, हमेशा की तरह, ईश्वर ने एक अवशेष को संरक्षित रखा है:

"वे सात हजार जिन्होंने बाल के सामने घुटने नहीं टेके और न ही उसे चूमा" (1 राजा 19:18)।

आज्ञा का महत्व

आज्ञाकारिता की याद दिलाने वाला चिन्ह

बाल और दाढ़ी से संबंधित आज्ञा एक ठोस अनुस्मारक है कि व्यक्ति आज्ञाकारिता और सांसारिक प्रभावों से अलग जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध है। यह ईश्वर की शिक्षाओं का सम्मान करने वाले जीवन का प्रतिबिंब है, जो सांस्कृतिक या सामाजिक मानदंडों से ऊपर है।

यीशु और उनके प्रेरितों ने इस आज्ञाकारिता का आदर्श प्रस्तुत किया, और उनका उदाहरण आधुनिक विश्वासियों को प्रेरित करना चाहिए कि वे इस अक्सर उपेक्षित आज्ञा को अपने ईश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के हिस्से के रूप में पुनः अपनाएँ।

यीशु, उनकी दाढ़ी और बाल

अंतिम उदाहरण के रूप में यीशु

यीशु मसीह ने अपने जीवन के माध्यम से यह दिखाया कि इस संसार में शाश्वत जीवन की तलाश करने वाला कोई भी व्यक्ति कैसे जीवन व्यतीत करे। उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि पिता की सभी आज्ञाओं का पालन करना कितना महत्वपूर्ण है, जिसमें ईश्वर के बच्चों के बाल और दाढ़ी से संबंधित आज्ञा भी शामिल है।

उनका उदाहरण दो प्रमुख पहलुओं में महत्व रखता है: उनके समकालीनों के लिए और भविष्य की पीढ़ियों के शिष्यों के लिए।

रब्बी परंपराओं को चुनौती देना

अपने समय में, यीशु का तोराह के प्रति पालन यहूदियों के जीवन पर हावी रब्बी शिक्षाओं को चुनौती देने का कार्य था। ये शिक्षाएँ तोराह के प्रति अति-निष्ठा प्रतीत होती थीं, लेकिन वास्तव में, ये मुख्यतः मानव परंपराएँ थीं जो लोगों को उन परंपराओं के "गुलाम" बनाए रखने के लिए डिज़ाइन की गई थीं।

शुद्ध और निष्कलंक आज्ञाकारिता

यीशु ने तोराह का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए—जिसमें उनकी दाढ़ी और बालों से संबंधित आज्ञाएँ भी शामिल थीं—इन विकृतियों को चुनौती दी और ईश्वर की व्यवस्था के प्रति शुद्ध और निष्कलंक आज्ञाकारिता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

भविष्यवाणी और यीशु की पीड़ा में उनकी दाढ़ी का महत्व

यीशु की दाढ़ी का महत्व उनकी पीड़ा और भविष्यवाणी में भी उजागर होता है। मसीहा की यातना के बारे में यशायाह की भविष्यवाणी में, दुखी सेवक के रूप में, यीशु ने जिन यातनाओं को सहा, उनमें से एक थी उनकी दाढ़ी को खींचना और उखाड़ना:

"मैंने अपनी पीठ उन लोगों को दी जिन्होंने मुझे पीटा, और अपनी गालें उन लोगों को दी जिन्होंने मेरी दाढ़ी उखाड़ी; मैंने अपने चेहरे को उपहास और थूक से नहीं छिपाया" (यशायाह 50:6)।

यह विवरण न केवल यीशु की शारीरिक पीड़ा को उजागर करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि उन्होंने ईश्वर की आज्ञाओं के प्रति अडिग रहते हुए अकल्पनीय यातना का सामना किया। उनके उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि आज भी उनके अनुयायियों को हर क्षेत्र में ईश्वर की व्यवस्था का सम्मान करना चाहिए।

इस शाश्वत आज्ञा का पालन कैसे करें

बाल और दाढ़ी की लंबाई

पुरुषों को अपने बाल और दाढ़ी ऐसी लंबाई में बनाए रखने चाहिए जो दूर से देखने पर स्पष्ट रूप से दिखाई दें। न तो बहुत लंबे और न ही बहुत छोटे; मुख्य बात यह है कि बाल और दाढ़ी को बहुत पास से न काटा जाए।

प्राकृतिक किनारों को न मुंडवाएँ

बाल और दाढ़ी को उनके प्राकृतिक किनारों पर मुंडवाना या काटना नहीं चाहिए। यह आज्ञा का मुख्य पहलू है, जो हिब्रू शब्द *पे आह* (פֶּאֱה) पर आधारित है। इसका अर्थ है किनारा, सीमा, कोना या पक्ष। यह बालों या दाढ़ी के प्रत्येक रेशे की लंबाई पर नहीं, बल्कि उनके प्राकृतिक किनारों पर केंद्रित है।

उदाहरण के लिए, यही शब्द *पे आह* खेतों के किनारों के संदर्भ में उपयोग किया गया है:

"जब तुम अपनी भूमि की फसल काटो, तो अपने खेत के किनारों (पे'आह) को न काटो और न अपनी फसल के गिरे हुए अंशों को इकट्ठा करो" (लैव्यव्यवस्था 19:9)।

हर उस पुरुष के लिए जो परमेश्वर से डरता है और उसके पुत्र, यीशु मसीह का अनुसरण करता है: बाल और दाढ़ी।

सही

बालों (सभी किनारों), दाढ़ी (गर्दन सहित) और मूछ का प्राकृतिक आकार वैसा ही है। इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया है।



गलत

बालों, दाढ़ी और मूछ के प्राकृतिक आकार को बदल दिया गया है।



parameshwarkinriyam.org

यह स्पष्ट है कि यह खेत के पौधों की लंबाई या ऊँचाई को नहीं, बल्कि स्वयं खेत की सीमा को संदर्भित करता है। बाल और दाढ़ी के मामले में भी यही समझ लागू होती है।

आज्ञा का पालन करने के मुख्य बिंदु

1. **दिखावट बनाए रखें:** बाल और दाढ़ी स्पष्ट रूप से उपस्थित और पहचानी जा सकें, जैसा कि ईश्वर ने आदेश दिया है।
2. **प्राकृतिक किनारों को बनाए रखें:** बालों और दाढ़ी की प्राकृतिक रेखाओं को मुंडवाने या बदलने से बचें।

इन सिद्धांतों का पालन करके, पुरुष इस दिव्य निर्देश का निष्ठापूर्वक पालन कर सकते हैं और ईश्वर की शाश्वत आज्ञाओं का सम्मान कर सकते हैं।

इस आज्ञा को न मानने के तर्क जो अस्वीकार्य हैं

अस्वीकार्य तर्क:

"यह केवल उन पर लागू होता है जो दाढ़ी रखना चाहते हैं"

कुछ पुरुष, जिनमें मसीही अगुवा भी शामिल हैं, यह तर्क देते हैं कि उन्हें इस आज्ञा का पालन करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे पूरी तरह से अपनी दाढ़ी मुंडवा लेते हैं। इस तर्क के अनुसार, आज्ञा केवल उन पर लागू होती है जो "दाढ़ी रखना" चुनते हैं।

यह सुविधाजनक तर्क पवित्र ग्रंथ में कहीं भी नहीं पाया जाता। यहाँ कोई "यदि" या "इस स्थिति में" जैसी शर्त नहीं है; केवल स्पष्ट निर्देश हैं कि बाल और दाढ़ी को कैसे बनाए रखना है। इसी प्रकार की सोच के आधार पर, कोई अन्य आज्ञाओं को भी खारिज कर सकता है, जैसे सब्त:

- "मुझे सातवें दिन का पालन करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं किसी भी दिन का पालन नहीं करता," या
- "मुझे वर्जित मांसों की चिंता करने की ज़रूरत नहीं क्योंकि मैं कभी यह नहीं पूछता कि मेरी थाली में किस प्रकार का मांस है।"

इस प्रकार का दृष्टिकोण ईश्वर को प्रभावित नहीं करता, क्योंकि वह देखता है कि व्यक्ति उसकी व्यवस्थाओं को कुछ आनंददायक के बजाय एक असुविधा के रूप में देखता है, जिसे वह चाहता है कि अस्तित्व में न हो। यह दृष्टिकोण भजन संहिता के लेखकों की भावना के बिल्कुल विपरीत है:

"हे प्रभु, मुझे अपनी व्यवस्थाएँ समझने की शिक्षा दे, और मैं सदा उनका पालन करूँगा। मुझे समझ दे ताकि मैं तेरी व्यवस्था को अपने पूरे हृदय से मान सकूँ और उसका पालन कर सकूँ" (भजन संहिता 119:33-34)।

अस्वीकार्य तर्क:

"दाढ़ी और बालों के बारे में आज्ञा पड़ोसी राष्ट्रों की मूर्तिपूजक प्रथाओं से संबंधित थी"

लैव्यव्यवस्था 19:27 में दी गई आज्ञा, जिसमें सिर के बालों को चारों ओर से न मुंडवाने और दाढ़ी के किनारों को त्वचा के पास से न काटने के लिए कहा गया है, अक्सर मूर्तिपूजक संस्कारों से जोड़ा जाता है। हालाँकि, जब हम संदर्भ और यहूदी परंपरा की गहराई से जाँच करते हैं, तो यह व्याख्या पवित्र शास्त्रों में ठोस आधार से रहित पाई जाती है।

पवित्र ग्रंथ में हिब्रू में यह लिखा है:

"לא תקיפו פאת ראשכם, ולא תשחית את פאת זקנך" (lo taqqifu peá roshkhem, velo tashchit et peá zekanecha), जिसका अर्थ है: **"अपने सिर के चारों ओर के बाल मत मुंडाओ और अपनी दाढ़ी के किनारों को त्वचा के पास मत काटो।"**

यहाँ शब्द פאת (peá) का अर्थ है किनारा, सीमा, कोना, या पक्ष। यह आज्ञा स्पष्ट रूप से व्यक्तिगत उपस्थिति से संबंधित है, और इसमें मृतकों के लिए मूर्तिपूजक प्रथाओं या किसी अन्य मूर्तिपूजक प्रथा का कोई उल्लेख नहीं है।

लैव्यव्यवस्था 19 का व्यापक संदर्भ

लैव्यव्यवस्था 19:1-37 में विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनेक आज्ञाएँ शामिल हैं, जो दैनिक जीवन और नैतिकता को समेटती हैं। इनमें शामिल हैं:

- रक्त न खाना (लैव्यव्यवस्था 19:26),
- सब्त का पालन करना (लैव्यव्यवस्था 19:3, 19:30),

- विदेशियों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार (लैव्यव्यवस्था 19:33-34),
- बुजुर्गों का सम्मान करना (लैव्यव्यवस्था 19:32),
- ईमानदार माप और तौल का उपयोग (लैव्यव्यवस्था 19:35-36),
- विभिन्न प्रकार के बीजों को मिलाने से रोकना (लैव्यव्यवस्था 19:19), और
- ऊन और लिनन को एक साथ मिलाकर वस्त्र न पहनना (लैव्यव्यवस्था 19:19)।

इनमें से प्रत्येक आज्ञा यह दर्शाती है कि ईश्वर को अपने लोगों के जीवन में पवित्रता और व्यवस्था का कितना ध्यान था। इसलिए, प्रत्येक आज्ञा को उसके अपने गुणों के आधार पर समझना आवश्यक है। यह कहना कि बाल और दाढ़ी न काटने की आज्ञा (लैव्यव्यवस्था 19:27) केवल मूर्तिपूजक प्रथाओं से संबंधित है, अनुचित है, भले ही पद 28 में मृतकों के लिए शरीर पर कट लगाने और पद 26 में टोना-टोटका करने का उल्लेख हो।

आज्ञा में कोई शर्त नहीं है

पवित्र शास्त्र में कोई अपवाद नहीं

यद्यपि तनाख में कुछ ऐसे संदर्भ मिलते हैं, जहाँ बाल और दाढ़ी को मुंडवाने को शोक के साथ जोड़ा गया है, लेकिन शास्त्र में कहीं भी यह नहीं लिखा गया है कि एक व्यक्ति अपने बाल और दाढ़ी केवल इस शर्त पर काट सकता है कि वह इसे शोक के प्रतीक के रूप में नहीं कर रहा है।

यह शर्त, जो आज्ञा को सीमित करती है, मानव द्वारा जोड़ी गई है—एक ऐसा प्रयास जो ईश्वर की व्यवस्था में वह अपवाद ढूँढता है, जो स्वयं ईश्वर ने शामिल नहीं किए। इस प्रकार की व्याख्या पवित्र पाठ में उन धाराओं को जोड़ती है जो वहाँ नहीं हैं, और यह पूर्ण आज्ञाकारिता से बचने के औचित्य की खोज को प्रकट करती है।

आज्ञाओं में बदलाव करना विद्रोह है

आज्ञाओं को व्यक्तिगत सुविधाओं के अनुसार बदलने का रवैया, बजाय इसके कि जैसा स्पष्ट रूप से आदेश दिया गया है, उसका पालन किया जाए, ईश्वर की इच्छा के प्रति आत्मसमर्पण की भावना के विरुद्ध है। मृतकों के लिए बाल और दाढ़ी मुंडवाने का उल्लेख करने वाले पद इस बात की चेतावनी हैं कि यह बहाना बाल और दाढ़ी से संबंधित आज्ञा तोड़ने को सही ठहराने के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

ऑर्थोडॉक्स यहूदी

आज्ञा के प्रति उनकी समझ

हालाँकि, बाल और दाढ़ी काटने से संबंधित कुछ विवरणों को लेकर उनकी समझ में त्रुटियाँ हैं, फिर भी प्राचीन काल से लेकर आज तक ऑर्थोडॉक्स यहूदियों ने लैव्यव्यवस्था 19:27 में दी गई आज्ञा को मूर्तिपूजक प्रथाओं से संबंधित कानूनों से अलग ही समझा है।

वे इस भेद को बनाए रखते हैं, यह मानते हुए कि यह निषेध पवित्रता और अलगाव के सिद्धांत को दर्शाता है, जो शोक या मूर्तिपूजक रीति-रिवाजों से संबंधित नहीं है।

हिब्रू शब्दों का विश्लेषण

पद 27 में प्रयुक्त हिब्रू शब्द जैसे *taqqifu* (תקפו), जिसका अर्थ है "चारों ओर काटना या मुंडाना," और *tashchit* (תשחית), जिसका अर्थ है "क्षति पहुँचाना" या "नष्ट करना," यह संकेत देते हैं कि एक पुरुष की प्राकृतिक उपस्थिति को इस प्रकार बदलना मना है, जिससे ईश्वर की पवित्रता की छवि का अनादर हो।

इन शब्दों का मूर्तिपूजक प्रथाओं से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, जैसा कि पिछले या अगले पदों में वर्णित है।

पवित्रता के सिद्धांत के रूप में आज्ञा

यह दावा करना कि लैव्यव्यवस्था 19:27 मूर्तिपूजक प्रथाओं से संबंधित है, गलत और पक्षपातपूर्ण है। यह पद आज्ञाओं के ऐसे सेट का हिस्सा है, जो इस्राएल के लोगों के आचरण और रूप-रंग को मार्गदर्शित करता है, और इसे हमेशा एक विशिष्ट आदेश के रूप में समझा गया है, जो अन्य शोक या मूर्तिपूजक रीति-रिवाजों से अलग है।

यीशु का शिक्षण: वचन और उदाहरण द्वारा

मसीह का सच्चा अनुयायी अपने जीवन में उनके उदाहरण को अपना आदर्श मानता है। यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि हम उनसे प्रेम करते हैं, तो हम पिता और पुत्र के प्रति आज्ञाकारी रहेंगे।

यह उनकी अपेक्षा है जो अपने जीवन की दृष्टि ईश्वर के राज्य पर लगाए रखते हैं और अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार हैं—even अगर इसका मतलब दोस्तों, चर्च, और परिवार से विरोध का सामना करना पड़े।

अधिकांश ईसाई धर्म द्वारा उपेक्षित आज्ञाएँ

बाल और दाढ़ी, [स्तीतीत](#), [खतना](#), [सब्त](#), और [अवैध मांस](#) से संबंधित आज्ञाएँ लगभग सभी ईसाई धर्मों द्वारा उपेक्षित हैं। जो लोग भीड़ का अनुसरण करने से इनकार करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से सताव का सामना करना पड़ेगा, जैसा कि यीशु ने हमें बताया था।

ईश्वर की आज्ञाओं का पालन साहस की माँग करता है, लेकिन इसका प्रतिफल अनन्त जीवन है।